...अनुभव...

हर मोड़ पर परमात्मा ने साथ निभाया

कहाँ तो मैं अपनी समस्याओं में ही उलझकर दुःखों के पहाड़ को बड़ा कर रही थी! तभी एक मधुर आवाज़ आयी - 'शांत हो जाओ, आप तो मेरे अपने हो।' ये आवाज़ मन को सुकून दे गई। यहाँ पर ही नहीं रुका यह सिलसिला, बल्कि सफेद फरिश्तों ने साक्षात दर्शन भी दिये। परंतु मैं फिर उसी पुराने जीवन के दुःख के रोने में बेचैन रहने लगी। पर एक बार फिर मेरा फरिश्तों से न सिर्फ सम्पर्क हुआ, बल्कि उन जैसा बनने का तौर तरीका भी मिल गया। अब मेरे जीवन में हर पल सुख-शांति और प्रेम के मधुर संगीत बजते रहते हैं। वाह रे मैं....! वाह रे फरिश्ते....! वाह मेरा बाबा....!

मेरा अलौकिक जन्म 24 दिसम्बर 2015 को हुआ। उससे पहले मैं अपने पारिवारिक समस्याओं से बहुत परेशान रहती थी और मैं आत्मिक रूप से कमज़ोर होती जा रही थी। ऐसे दौर से मैं गुज़र रही थी कि समझ ही नहीं आता था कि क्या करूँ और क्या न करूँ? ऐसे वक्त पर मेरे कानों में एक आदमी की मधुर सी आवाज़ आती थी कि 'तुम शांत रहो'। वह आवाज़ सुनकर मैं थोड़ी देर शांत हो जाती थी। ऐसा कई बार होता रहा। थोड़े दिनों के बाद एक रात मुझे एक सपना आया, उस सपने में चार सफेद वस्त्रधारी लोग आये। उन्होंने मुझसे कहा कि तुमको शिव ने संसार में सबसे प्यारा भक्त माना है। मैं उस बात को सुनकर हँस पड़ी, मैंने सोचा कि मैंने कभी शिव की पूजा तक नहीं की, और उन्होंने मुझे संसार में सबसे प्यारा भक्त कैसे मान लिया! वह सफेदधारी इतने में उड़ गये। उसके बाद मैंने एक बार दो तीन सफेद वस्त्रधारी लोगों को जाते देखा। मुझे वही सपने में दिखे थे, वे वैसे ही थे। पर मैंने उनसे बात नहीं की क्योंकि वे कहीं जा रहे थे।

थोड़े दिनों के बाद मेरा ब्रह्माकुमारीज़ के सेवाकेन्द्र में जाना हुआ, मुझे इस सेवाकेन्द्र का कुछ पता नहीं था। मैं यूं ही चली गई। वहाँ पर मुझे एक दीदी मिली, दीदी को देख मुझे फिर वो ही अपना सपना याद आ गया कि सपने में भी मैंने ऐसे सफेद वस्त्रधारी देखे थे। दीदी ने कहा कि तुम बृहस्पतिवार को आई हो, यह शुभ दिन है।

वहाँ उन्होंने मुझे बाबा का परिचय दिया और सात दिन का कोर्स कराया। कोर्स के बाद मेरे मन में ख्याल आया कि ये सब संस्थाएं ऐसी ही होती हैं। अब मैं वहाँ नहीं जाऊंगी। सात दिन का कोर्स करने के बाद मैं 10 दिन तक नहीं गई तो फिर से मेरे मन में वही मीठी आवाज़ आने लगी कि आओ बच्चे, तुम मेरे हो, मेरे पास आओ। तो मुझे फिर से सेन्टर की याद आने लगी। जब मैं वहाँ गई तो मुझे वहाँ शांति का अनुभव हुआ। बेचैन मन में सुकून सा अनुभव हुआ। ऐसा अनुभव हुआ जैसे मुझे सबकुछ आज मिल गया, मुझे ऐसा लगा कि मैंने आज ही बेहद का मिलन मना लिया है। परमात्मा ने मेरा साथ दिया। मैंने मुरली सुननी शुरू भी नहीं की थी पर मुझे चक्र का ज्ञान अन्दर ही अन्दर होने लगा। मुझे ऐसा अनुभव होने लगा कि बाबा मेरे साथ-साथ चल रहे हैं।

मैं रात को सोती थी तो ब्रह्माबाबा, शिवबाबा मेरे पास आते थे और कहते थे कि तुम मेरे बच्चे हो। तुम्हारा जन्म मेरी गोद में हो चुका है। अब तुम हमारे हो। मुझे बहुत खुशी हुई, फिर मैं रोज़ मुरली सुनने जाने लगी। अब मैं सोचती हूँ कि मेरे जैसा भाग्यशाली हर आत्मा बने, इसीलिए दिल कहता है - हज़ारों धन्यवाद हैं ओ मेरे बाबा।

- माया फर्त्याल, खानपुर, नई दिल्ली।

अपनी ऊर्जा के प्रति जागृत हों...

हमारे पास सीमित ऊर्जा होती है। अपने काम-काज के सिलसिले में हमें कई लोगों से मिलना पड़ता है। उनमें से कुछ आपको सुलझाते हैं, कुछ उलझन में डालते हैं। हमें अपनी ऊर्जा का उपयोग करने में जागरुकता रखनी पड़ेगी। कुछ लोग ऐसे भी होंगे, जो आपकी ऊर्जा को निचोड़ लेंगे और आपके हाथ कुछ नहीं लगेगा। अंगद रावण से बात करते समय कहते हैं, चौदह लोगों को मैं मुर्दे के समान समझता हूँ और मुर्दों से क्या उलझना! इस संवाद पर तुलसीदासजी ने लिखा है - 'जौं अस करौं तदपि न बड़ाई। मुएहि बधें नहिं कछु मनुसाई।। कौल कामबस कृपिन बिमूढ़ा। अति दरिद्र अजसी अति बूढ़ा।। सदा रोगबस संतत क्रोधी। बिष्नु बिमुख श्रुति संत बिरोधी।। तनु पोषक निंदक अघ खानी। जीवत सव सम चौदह प्रानी।' अंगद कहते हैं - मरे हुए को मारने में कोई पुरूषत्व नहीं है। वाममार्गी, कामी, कंजूस, अत्यंत मूढ़, बहुत दरिद्र, बदनाम, अत्यधिक बूढ़ा, नित्य का रोगी, सदैव क्रोध करने वाला, भगवान से विमुख, वेद और संतों का विरोधी, अपना ही शरीर पोषित करने वाला,

दूसरों का निंदक और महापापी, ये चौदह प्राणी जीते जी मुर्दे के समान हैं। यह सोचकर ही मैं तुझसे नहीं उलझ रहा हूँ। यहाँ अंगद के माध्यम से बताया गया है कि हमें इन 14 प्राणियों को बड़ी सावधानी से अपने जीवन में प्रवेश करने देना चाहिए। जब भी ऐसे लोग सामने आएं, अपनी ऊर्जा बचाएं और आगे बढ़ चलें, क्योंकि बहुत से काम ऐसे हैं जो इस प्रकार की वृत्ति के लोगों को दूर रखकर ही किए जा सकते हैं।

यद्यपि हमें अपनी अमूल्य जीवन की यात्रा को आगे बढ़ाना है, जीवन जीना है, परंतु ध्यान रखना है कि अपनी ऊर्जा को क्षीण होने से बचाना है। अपनी शक्ति को सही दिशा में लेकर अपने लक्ष्य की ओर आगे बढ़ना है। इसके लिए हर पल लक्ष्य को स्मृति में रखना है। जीवन की राह को 'पर्पज़ फुल' पटरी पर चलाते हुए आनंदित रहना है। न ही उलझना न, और न ही मूड ऑफ करना है।

अमेठी-उ.प्र.। चित्र प्रदर्शनी का अवलोकन करने के पश्चात् मंचासीन हैं पूर्व विधायक मोनू सिंह, ब्र.कु. सुमित्रा, डॉ. पांडेय तथा सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. सुषमा।

सूरत-अडाजण। पूर्णा वाइल्ड लाइफ सैंक्चुअरी,महल में 'पर्यावरण और आध्यात्मिकता' विषय पर सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. दक्षा। साथ हैं आई.एफ.एस. ऑफिसर अग्निश्वर व्यास, आई.एफ.एस. ऑफिसर चितरंजन सोनवने, रेंजर नरेन्द्र मिस्त्री, रेंजर खत्री जी तथा रेंजर जडेजा जी।

इंदौर-पीथमपुर(से.3)। व्यापारियों के लिए 'तनावमुक्त व्यापार' शिविर के पश्चात् चित्र में सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सुनीता, ब्र.कु.विद्या तथा व्यापारीगण।

किल्ला पारडी-गुज.। 'स्वस्थ मन स्वस्थ तन शिविर' का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. कुसुम, डॉ. राजेश वरिठौर, पतंजलि योगपीठ की प्रभारी हेलत बहन, गुरू आशीष देसाई, धर्मीन शाह तथा अन्य।

छत्तरपुर। ए.डी.जे. संजय जैन, सी.जे.एम. दिनेश कुमार शर्मा और उनके परिवार के सदस्यों को आध्यात्मिक म्युज़ियम दिखाते हुए और जीवन में आध्यात्मिकता की महत्ता के बारे में बताते हुए ब्र.कु. मोनिका।

कोरबा-छ.ग.। 'गुड बाय डायबिटीज़' शिविर के दौरान मंचासीन हैं विधायक जयसिंह अग्रवाल, नगर निगम महापौर रेणु अग्रवाल, ब्र.कु. डॉ. श्रीमंत साहू, उत्पादन कार्यपालक निदेशक एम.एस. कंवर, ऑल इंडिया मेडिकल एसोसिएशन के अध्यक्ष डॉ. अविनाश तिवारी, समाजसेवी उमा बंसल तथा ब्र.कु. रुक्मणि।

पनवेल-महा.। जागतिक स्वास्थ्य दिवस पर रोहा रोट्री क्लब द्वारा आयोजित कार्यक्रम के दौरान चित्र में ब्र.कु. डॉ. शुभदा नील के साथ रोट्री क्लब के सदस्य तथा अन्य गणमान्य लोग।

बरेली-उ.प्र.। बैंक ऑफ बड़ौदा ट्रेनिंग सेंटर में उ.प्र. बैंक मैनेजर्स के लिए आयोजित कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. पारुल। साथ हैं ब्र.कु. लक्ष्मी।